DEPARTMENT OF POLITICAL SCIENCE
D.B. COLLEGE, JAYNAGAR

BY:DR. ANANTESHWAR KUMAR YADAV
(ASSIST. PROFESSOR, GPTT)
M0 - 9415376545

B.A PART-I (HONS) Paper Second

LALIT NARAYAN MITHILA UNIVERSITY, DARBHANGA-846004(BIHAR)

Ref. No..... Lecture No. 15 Date. 28/04/2020

मोहनदास करमचन्द गाँधी
(1869 - 1948)

आधुनिक भारत के इतिहास में गाँधी का अविर्भाव एक ऐसी घटना है जिसके बिना भारत की अस्मिता की पहचान भी संभव नहीं है। आधुनिक भारत की संरचना में उनकी भूमिका न होती तो भारत आज किस स्थिति में होता? यह एक ऐसा प्रश्न है, जिसका उत्तर कई तरह से दिया जा सकता है। स्वतंत्रता तो भारत का जन्म सिद्ध अधिकार था उसकी प्राप्ति तो अवश्य ही होनी थी किन्तु कब सन 1947 में जो स्वतंत्रता प्राप्त हुई, वह गाँधी की भूमिका के बिना संभव थी? सन 1905 से लेकर अपने देहावसान तक गाँधी ने जिस प्रकार कार्य किया, वह अपने आप में एक अविस्मरणीय मिसाल है। किसी भी अन्य इतिहास पुरुष से उनकी तुलना नहीं की जा सकती। उन्होंने वैचारिक और व्यवहारिक दोनों धरातलों पर जो कार्य किया आधुनिक भारत इन्हीं प्रयत्नों का प्रतिफल है। लगभग 40 वर्षों तक वे भारत के राजनैतिक, आर्थिक, सामाजिक तथा नैतिक चेतना के केन्द्र बिन्दु बने रहे। उनकी कथा ऐसी विशिष्ट उपलब्धि थी जिसकी वजह से वे इतनी सम्मानित हुए? इसका उत्तर एक शब्द गाँधीवाद से दिया जा सकता है।

गाँधीवाद क्या है? क्या यह एक दर्शन है? इन प्रश्नों का उत्तर सहज नहीं है। गाँधी एवं अपने विचारों को गाँधीवाद की संज्ञा नहीं

Scanned with CamScanner

DEPARTMENT OF POLITICAL SCIENCE
D.B. COLLEGE, JAYNAGAR
BY:DR. ANANTESHWAR KUMAR YADAV
(ASSIST. PROFESSOR, GPTT)
MO- 9415376545
BA PART-I (HONS.) Paper-II
LALIT NARAYAN MITHILA UNIVERSITY, DARBHANGA-846004(BIHAR)

Ref. No................. Date 28/04/2020

देना चाहते थे। उन्होंने कभी मौलिकता का दावा नहीं किया। 'दर्शन' शब्द से भी उनके विचारों का समुचित स्पष्टीकरण हो सकना संभव नहीं है। किसी शास्त्रीय अर्थ में उनके विचारों को दर्शन नहीं कहा जा सकता। वे अत्यन्त स्वतंत्र प्रवृत्ति के व्यक्ति थे। उन्होंने कभी अपने विचारों को तर्क संगत ढंग से संकलित नहीं किया। उनके विचारों को आसानी से सुसंपादित करना सहज कार्य नहीं है। उनकी कुछ मौलिक धारणाएँ कुछ अवश्य थीं और वे जीवनपर्यंत उनका अनुगमन करते रहे। किन्तु वे अपने विचारों को विभिन्न संदर्भों के अनुरूप संशोधित भी करते चले गए। उनके कई विचारों में पारस्परिक विरोधाभास भी है। वे उत्तेजित होकर कभी कोई बात नहीं कहते थे किन्तु जिस व्यक्ति का कर्मक्षेत्र इतना विशाल और विराट हो उसके विचारों में निरन्तर विकास के सिद्धान्त के अनुरूप परिवर्तनशीलता का होना आवश्यक था।

एक महत्त्वपूर्ण तथ्य यह भी है कि गाँधी के विचारों को उनके जीवन से अलग करके नहीं देखा जा सकता। उनके जितने भी विचार औपचारिक रूप में उपलब्ध हैं उनके पठन-पाठन मात्र से गाँधी के विचारों का पूर्ण ज्ञान हो पाना संभव नहीं है। उनकी समस्त आस्थाओं का स्रोत उनका व्यक्तिगत रूप से जिया हुआ सत्य है। उनकी सारी दार्शनिक अनुभूतियाँ उनके कर्मयोग की देन है। उन्होंने जो कुछ भी कहा, उसको स्वयं करके दिखाया। वे दुनिया के पहले व्यक्ति थे जिसकी कथनी और करनी में कभी कोई अन्तर नहीं रहा। इसलिए जब भी हम उनके विचारों का अध्ययन करते हैं, हमें उनके द्वारा संचालित राजनैतिक तथा सामाजिक गतिविधियों को भी ध्यान में रखना पड़ता है तभी 'गाँधी दर्शन' या 'गाँधीवाद' की समग्रता का आभास होता है।

PTO

Continue till next date